श्री

लाडिली चंद्र

निर्मित

ब्रह्मस्तव

श्रीरसिक शिरोमणि कृत भाषा टीका सहित

जिसको

श्रीमोहिनीलाल गुप्त

ने भलीभांति शुद्ध

करके

श्रीप्यारीमोहन शूर

के प्रबंध से

कलकत्ता

डफष्ट्रीट भवन नंबर १४

कौननामयंत्रमें

मुद्रित कराया

संवत १९४१ ।

मूल्य प्रति पुस्तक [illegible]

श्री

श्रीगणेशाय नमोनमः

अथ ब्रह्मस्तवः

सटीकः



भूमिका

सरोठा

श्रीकरगुरुमुदमूल जनरंजनसंकटहरण ।
रहो सदा अनुकूल परब्रह्मवाचस्पती ॥ १ ॥
रसिकशिरोमणिनाम सेवकसाधूसंतको ।
सुनियेसवगुणधाम विनयकरैकरजोरिकैं ॥ २ ॥
ब्रह्मस्तवसुखदान भन्योलाडिलीचंद्रनै ।
अष्टादशपरिमान जामेंसिगरेछंदहैं ॥ ३ ॥
दोहाबंधबनाय ताकीब्रजभाषाकरौं ।
भावअर्थसमुझाय अक्षरअर्थहिछाडिकैं ॥ ४ ॥
कोउनपावतपार वाणीदैवी अतिकठिन ।
रखियेनहिउरधार भूलचूकतातैं चतुर ॥ ५ ॥

अथ ब्रह्मस्तव प्रारम्भः

मूल ॥ यशोदं वागिंद्रं विमलदरदंसिद्ध
भिषजं । यमंधन्यंपुण्यमणव

निलयंसृष्टिनियमम् ॥ प्रपद्ये
गोऽलक्ष्यं विविधगुणयुक्तं च
मनसा । विवस्वंतंज्येष्ठम्मख
पतिमनिर्देश्यवपुषम् ॥ १ ॥

टीकादोहा ।

यशदाता वाणीपती देतविमल वरदान ।
स्वयं सिद्धजो आपहै करतरोगकोहान ॥ १ ॥
न्यायकरतहैधन्यजो शुद्धप्रणवकोधाम ।
नेमरूप अरहोयकैं साधैसृष्टिसुकाम ॥ २ ॥
बहुविधगुणजामेंभरे राजतजोत अपार ।
सबहीतें जोज्येष्ठहै धरे यज्ञ अधिकार ॥ ३ ॥
इंद्रीजाकोनहिलखैं वपूनदिखनेहार ।
तारशरणमैंलेतहौंसनतेंसोचविचार ॥ ४ ॥

॥ (१) ॥

मूल ॥ शिवः सत्योविष्णुर्बहुगुणस
रुद्रः शुभकरः । निराधारोनि
त्योगणपतिरहोराजतिहरिः ॥
समावर्त्यप्राणो जगदखिल
मिंद्रः सुरपतिः । सतेजस्वी
स्वामीसकलसुखदायी भवतुमे ॥ २ ॥

टीकादोहा ।

तीनकालविनसतनहीं करैभक्तकल्यान ।
शुभकर्त्तापालनकरै बहुतगुणनकोखान ॥ ५ ॥

देवपती अरुगणपती नित्यजगतकौमूल ।
निराधार ईश्वरसुखद हरनतापत्रयमूल ॥ ६ ॥
छिगरैजगजोव्यापिकैं सोहत आप अघाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमयहोवसकलसुखदाय ॥ ७ ॥

॥ (२) ॥

मूल ॥ द्दृषाहीभक्तानांहरतिबहुदुःखं
प्रियतरः । अपारांगोतीतः श्रि
यमिह सवः संदिशतियः ॥
अजोऽछेद्योऽक्लेद्योऽमरविभु
जरातीतसुभगः । सतेजस्वी
स्वामीसकलसुखदायीभवतु मे ॥ ३ ॥

टीकादोहा ।

दुःखहरैसबभक्तकौ लक्ष्मीदेत अपार ।
परमपियारो ईशजो धर्म्मकरतविस्तार ॥८॥
इंद्रीजाकोनहिगहैं जनमनजाकैहोय ।
शस्त्रनजाकोकाटहीं सकैनवारिभिगोय ॥ ९ ॥
जरातीत सुंदर सुभग मरैनमाराजाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमयहोवसकलसुखदाय ॥ १० ॥

॥ (३) ॥

मूल ॥ यदाधारात्सर्वंजगदतिमहत्तिष्ठति
सदा । प्रभूतं यस्मात्तत्प्रलयतिच
यस्मिन्नविरतम् ॥ सदानंदोऽद्योको
विविध धनदः शंकरमृडः । सते-
जस्वी स्वामीसकलसुखदायीभवतु मे ॥ ४ ॥

टीकादोहा ।

महत अतीसिगरोजगत जातैं परगटहोय ।
रहतसदाजेहि आश्रय जामेंजायविलोय ॥ ११ ॥
भांतिभांतिकेधनबहुत भक्तजननकोदेय ।
मंगलह्वंमंगलकरन आपसदायशलेय ॥ १२ ॥
नित्यरहै आनंद जो सारेशोकविलाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमय होवसकलसुखदाय ॥ १३ ॥

॥ (४) ॥

मूल ॥ नदीनायौदास्यम्भजतिस
मयेयः सुविषमे । नरा यं
ध्यायंतोनपरिभवब्रच्छं
तिसततम् ॥ असंख्येयः
शेषोभवभयहरोऽचिंत्यवि
बुधः । सतेजस्वीस्वामी
सकलसुखदायी भवतुमे ॥ ५ ॥

टीकादोहा ।

दीनजननकेकारनै विषमसमै बहुजान ।
नहिसेवै औदास्यता भवभयहरनसुजान ॥ १४ ॥
ध्यानधरतजाकोसदा नारीनरसबलोग ।
नहींलहैं परिभवकभीजोनहि संख्यायोग ॥ १५ ॥
जो सबकोपरिशेषहै चिंतकियोनहिजाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमय होवसकलसुखदाय ॥ १६ ॥

॥ (५) ॥

मूल ॥ अलभ्योयोलभ्यो बकुलतर
सत्येनमुनिभिः । गणेशो
दस्युघ्नः सुविमलतपोभिः
सुमतिदः ॥ स्वभक्तेभ्योदद्या
ज्जयमपियशोरूपमखिलं ।
सतेजस्वीस्वामीसकलसुख-
दायीभवतुमे ॥ ६ ॥

टीकादोहा ।

सुंदरनिर्मलतपकरैं सत्यधरैं ऋषिराय ।
तबजाकोवेपावहीं सहजलह्योनहिंजाय ॥ १७ ॥
भक्तोंकोजोआपने देवसहाविस्तार ।
जयभीयशभीरूपभी सर्वगणालंकार ॥ १८ ॥
आपसुबुद्धीदेतजो पापीपापनसाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमय होवसकलसुखदाय ॥ १९ ॥

॥ (६) ॥

मूल ॥ भयाद्वायुर्यस्यप्रसरति
विभोः सर्वसुखदः । इदं
खेब्रह्माण्डं लुठतिपरितो
भोगभुवनम् ॥ परित्राणे
स्नेहस्वधमपतितानाम
तिवरः । सतेजस्वीस्वामी
सकलसुखदायीभवतुमे ॥ ७ ॥

टीकादोह ।

जाकेभयब्रह्माण्ड यह सदनकरमफलभोग ।
लोटतहैनितशून्यमें चारों ओर सुयोग ॥ २० ॥
जाविभुकौडरपायकैं सबसुखदेनेहार ।
बहतसदाहीनेमतैं सुंदररूपबयार ॥ २१ ॥
अधमपतितकेलानमेंदीनोप्रेमलगाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमय होवसकलसुखदाय ॥ २२ ॥

॥ (७) ॥

मूल ॥ अनाथानां तृष्णाकुलितहृद
यानामपिचय: । भवत्यार्द्रः
स्नेहेगदविरहित: पुण्यग-
तिदः ॥ महादेवोजिष्णुः
प्रबलतरयत्नोऽसुररिपुः । स
तेजस्वीस्वामीसकलसुखदायी
भवतु मे ॥ ८ ॥

टीकादोहा ।

तृष्णायुतजिनकौ हियो जेनरनाथविहीन ।
तिनहूकी जो प्रीतमें रहतसदालवलीन ॥ २३ ॥
को दूरोगजाकैनहीं पुण्यगतीदातार ।
देवों काजोदेवहै सबकुछजाननहार ॥ २४ ॥
दुष्टजननकौ जो रिपू कीनोयत्नदृढ़ाय ।
सोप्रभुमोरैतेजमय होवसकलसुखदाय ॥ २५ ॥

॥ (८) ॥

मूल ॥ जगन्नाथोऽग्रोग्य: परमरमणी
यं खलुपदं। ददातिप्राणेश: स
पदिनिज भक्तेभ्यइहय: ॥ निरा-
कारोऽदाग्ग्योव्रतपतिरधी
शोऽच्युततपा:। सतेजस्वी
स्वामीसकलसुखदायीभवतु मे ॥ ९ ॥

टीकादोहा।

सर्वजगतकौनाथ जो जाकैनहि आकार।
देझट अपने भक्तको सुंदरपदहि विचार ॥ २६ ॥
देवशिरोमणि आपहै सबकौ प्राण अधार।
अच्युतयश जानैगग्यो राखैव्रत अधिकार ॥ २७ ॥
जाकोपवनन सोखिहै सकैन अग्निजलाय।
सो प्रभुमोरैतेजमय होवसकलसुखदाय ॥ २८ ॥

॥ (९) ॥

मूल ॥ नयोनेयोऽनंतोविबुधगण
पूज्योहिसविता। भव: स्वर्भु-
र्भर्गोनियम पुरुहूतोऽतुलबल: ॥
वरेराय: सर्वेषां हृदयकमले
सम्बसतिय:। सदेवों तस्मापं
हरतुममपापंच सहसा ॥ १० ॥

टीकादोहा

जाकोपूजैं देवगण कहींनहींहै अंत।
आदि उचारणतेजजो प्राणअतुलबलवंत ॥२९॥

जोतहिजामेंजगमगी नयअपानसुखधाम ।
नेयनियमजोआपही पूरतसबकेकाम ॥३० ॥
सबकेहीयेकमलमें बसतजुउत्तमहोय ।
अंततापअरु पापमम देवहरोझटसोय ॥ ३१ ॥

॥ (१०) ॥

मूल ॥ वह्निन्दुवर्षाणिगतानिचैव
त्वामे वनित्यञ्जिपन्मुनींद्र ।
केषाम्पुरो रोदिमिदु:खगाथां
कालेऽतिसूक्ष्मेकथय प्रभोमे ॥११ ॥

टीकादोहा

अष्टादशजोवर्षहैं वीत गये अव मोहि ।
अहो मुनिनके नाथजी जपतरैनदिनतोहि ॥३२॥
किन के आगेरोइये अपनो दुखविस्तार ।
याहिविपत्तीकालमें कहिये नायविचार ॥ ३३ ॥

॥ (११) ॥

मूल ॥ अवज्ञा मये नाथदेवास्तुसेर्वे
तवालम्बगर्वेणनीता मयैव ।
इदानीमहंलाडिली चंद्रदेव्यं
विहाय क्वगच्छामिपादाम्बुजंते ॥ १२ ॥

टीकादोहा

राखिभरोसो आपको मोहि भयो अभिमान ।
मोतें सिगरेदेवतव गयेपंयअपमान ॥ ३४ ॥

पूजनीय तवनाथगो चरणकमलको त्याग ।
मैंजु लाडिली चंद्र अब जावों कि तवहिभाग ॥३५॥

॥ (१२) ॥

मूल ॥ प्रतुंजत्वमेव प्रभोयामुनेयं
पितर्देव मातश्चगोपाल राजन् ।
अयोध्यात्मजम्मामबोघस्वदासं
यथस्विन्निराधारमीशानशम्भो ॥१३॥

टीकादोहा

यमुना माताके उदर जनमलियोमैं आन ।
अहो नाथ मेरौभयो पिताअयोध्यसुजान ॥३६॥
सोमैं सेवक आपकौ कोजैवेगसहाय ।
मातपितातुमविध्रके यशोवंतसुरराय ॥ ३७ ॥
इंद्रीगौ अरुभूमिजे तिनकों पालनहार ।
रोगरहित शंभू अचल राखतनहि आधार ॥ ३८ ॥

॥ (१३) ॥

मूल ॥ आयात: शरणं कवेतवविभो
सिद्धार्थंधातारवे । विद्यांदे
हियशस्करींसुविमलां बुद्धिं
श्रियंदेहि मे ॥ भार्य्यांदेहिम
नोरमां सुदयितांवश्यंसुतं
पण्डितं । रूपंदेहियशश्च
देहिविजयं सिद्धिं वलंदेहिमे ॥ १४ ॥

टीकादोहा ।

अहोविभूधातारवी तुमहीपूरनकाम ।
आयोमैं तोरेशरण सिद्ध अर्थकेधाम ॥ ३९ ॥
विद्याजोयशदायिनी दीजैमोहीसोय ।
बुद्धीलक्ष्मीदीजियै विमल अतीजोहोय ॥ ४० ॥
बामादीजैमनहरी परमपियारीजान ।
सुतदीजैजोबसरहै सकलगुणनकीखान ॥ ४१ ॥
जययशमोकों दीजियै दीजैबलबहुरूप ।
सिद्धीसाधककामकीदीजैताहि सुरूप ॥ ४२ ॥

॥ (१४) ॥

मूल ॥ अग्राह्यं स्वस्तिदं सत्यं मंगलं
चक्रवर्तिनम् । हिरण्यगर्भ-
मादित्यं वंदेसिद्धम्प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥

टीकादोहा ।

जोतिरूपमंगलकरन स्वस्तीदेनेहार ।
जाकौराज अखंडहै निखिलतेज आधार ॥ ४३ ॥
सिद्धभयोजो आपही कभीगह्योनहिजाय ॥
ताहि प्रतिष्ठित सत्यकों वंदों सीसनिवाय ॥ ४४ ॥

॥ (१५) ॥

मूल ॥ पवित्रं सिद्धसंकल्पं सर्वज्ञं
हव्यवाहनम् ॥ भूगर्भम्प्राण
दंनित्यंध्यायेयं बहुविक्रमम् ॥ १६ ॥

टीकादोहा ।

बाहनजाकौहव्यहै स्वयंसिद्धहै काम ।
तीनभुवनहैं गर्भमें देजुसदाविश्राम ॥ ४५ ॥
आदि अंतजाकै नहीं जोहै अतिबलवान ।
ताहिशुद्ध सर्वज्ञ कों करों हृदे में ध्यान ॥ ४६ ॥

॥ (१६) ॥

मूल ॥ परर्द्धिः स्वयम्भूर्हरोजा
तवेदा विशिष्टः पुराणो
महेशः प्रणेता ॥ यशस्वी
कुवेरोविरामः प्रचेता
भवत्वर्य्यमाशक्र इंद्रः सदैव ॥ १७ ॥

टीकादोहा ।

आपभयो जो यशधरै प्रगटकिये सबवेद ।
धनदाता जो अर्य्यमा हरैजननकौखेद ॥ ४७ ॥
परमपुरातन इंद्र जो सकलजगतकर्तार ।
शुभमारगजो लेचलै भेद जनावनहार ॥ ४८ ॥
परऋद्धीजाकैबसै व्यापरह्यो आराम ।
सो विशिष्ट मोरैसदा होव अचल सुखधाम ॥ ४९ ॥

॥ (१७) ॥

मूल । ब्रह्मलवंसुखाकांची
लाडिलीचंद्रनिर्मितम् ॥
वह्निंदुसोक संयुक्तम्पठे-
द्भूत्वाशुचिः सदा ॥ १८ ॥

टीकादोहा ।

रच्योलाडिलीचंद्रनै ब्रह्मस्तव शुभमान ।
यामेंजितनेछंदहैं सर्व अठारहजान ॥ ५० ॥
जो सुखचाहैं आपनो नारीनरसबलोग ।
हो शुधमनबचकर्म तें याको पढैं सुयोग ॥ ५१ ॥

॥ (१८) ॥

इति ब्रह्मस्तवः ।

फल

सोरठा

कृपाकरीजगदीस टीकायहपूरैंनभइ ।
उन्निससौ अठबीस सम्बतविक्रमजीतके ॥ १ ॥
अहोसकलगुणरास टीकाहै जोमूलकी ।
ऊपर एकपचास ताकेदोहासबगिने ॥ २ ॥
भयेगणितमेंपांच भूमीके सबसोरठा ।
वर्णकहों हों सांच वितनेफलकेजानिये ॥ ३ ॥
राखि ब्रह्मकौध्यान पढ़ै सुनैजोप्रेमतें ।
पावैपदनिर्व्वान भोगैसुखसंसारके ॥ ४ ॥
हरैजुजनमनपीर रसिकशिरोमणिताहिभज ।
दुखभंजनबलबीर सुखदायक मंगलकरन ॥ ५ ॥



इति श्रीब्रह्मस्तवो लाडिलीचंद्र निर्म्मितो
रसिकशिरोमणि कृत भाषा
टीका संयुक्तः
संपूर्णः शुभः ॥

